सं श्रो वि (एक हो । 121-87/22932. -- बं सि हरियागा के राज्याल की राय है कि मैं बी सैन एक कमनी, 13/3, मयुरा रोड, फरीशवाद, के श्रीमा श्रो चन्द्र शिखर, माफंत श्री ब्रार एन राय मकंप्टाईन इन्यलाईज एसोसिएगन एव-347, न्य राजेन्द्रा नगर, नई दिल्तो-110060 तथा उन्ते प्रश्निकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित भामले के सम्बन्ध में कोई श्रीधोणिक विवाद है ;

योर चंति हरियाणा से राज्यसल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविष्ट छरना वांछनीय समप्तते हैं ;

इनित्र, प्रवे, श्रोबोंगिक विवाद अधिनियम, 1947, को घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (प) द्वारा प्रवान की गई सिवरों का अयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इसके हारा उन्त अधिनियम की घारा एक के अधीन गठित श्रीबोगिक अधिकरण, हिरियाणा, फरोदान्दर, को नोने निनिदिश्य पामने जो कि उन्त प्रक्षकों तथा अभिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला/ मामले हैं प्रयचा विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला/मामले है, ग्यायनिर्णम एवं पंचाट 3 मास में देने हेल् निर्दिश्य करते हैं:—

क्या श्री कन्द्र शेंबर को से अभी का समापन न्यायोजित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं ० पो० ति०/एक० डो०/34-8 र/22909 --चूं कि हिरिशाणा के राज्यनात को राय है कि मै० रिलायेन्स फेबरीकेटर्स एण्ड इंजीनियरिंग, फरीदाबाद, है श्रीमक्ष श्री प्रबद्ध रहमान, मार्फत फरीदाबाद इंजीनियर मजदूर यूनियन, जी-162, हन्द्रा नगर, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्ध हों एश्य इस में इस है बाद जिखित मामने के सम्बन्ध में कोई मौधीगिक विवाद है।

प्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यताल इस विजय को न्यायनिर्णय हेरू निविध्ट सरना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 को घारा 10 को उत्तधारा (1) के खण्ड (घ) हारा प्रदान की नई शक्तियों का श्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त प्रधिनियम की घारा 7-क के प्रधीन गठित भोद्योगिक प्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे जिनिदिष्ट मामले जो कि उक्त अवस्थकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला/मामने हैं प्रयवाविवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामने हैं प्रयवाविवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामने हैं, न्यायनिर्गण एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं :---

क्या श्री अब्दुल रहमान की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं प्रोव विव/एफ बोल / 119-87/22916 -- वृति हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैंव हैमला इम्झाई हरी निरुत्र प्राव लिव, मयुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री करवाण चन्द्र, मार्कत एटक ग्राफिस, मार्किट नंव 1, एनव्याई व्टीव, फरोदाबाद नया उसके प्रकथकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भोडोगिक दिवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेंतु निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, भौणोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (घ) हारा प्रवान की वई सक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यतान इसके द्वारा उन्त प्रधिनियम, की घारा 7-न के अधीन गठित श्रीशोगिक प्रधिकरण, हरियाणा, फरीराबाद, को नोवे विनिर्दिश्ट मामते जो कि उनत प्रवश्वकों नया श्रीमकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला/मामते हैं प्रयंग विवाद से मुसंगत या सन्वन्धित मामता/मामते हैं, न्याविनर्गय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निविष्ठ करते है:—

क्या श्री कल्याण चन्द्र की सेवाम्रों का समापन न्यायोजित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो वह विस राहत का हककार है ?

स. भी. वि./भिवानी / 43-87 / 22923. - - चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० (1) परिवहन आयुक्त, वृदियाणा, चण्डोगढ़, (2) महा प्रवत्य के, हरियाणा राज्य परिवहन, जोन्द, के श्रमिक श्रो जोत सिंह, सहायक टायरमैन, पुत्र श्री शेर सिंह, मार्फेत श्री एस० एन० वत्स, गली डाकखाना, रोहतक तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई भीछोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिकंय हेतु निविष्ट करना वास्त्रनीय समझते हैं;

इसलिये, प्रव, प्रोधोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई विकास का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी प्रधिस्चना सं० 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 प्रप्रेल, 1984 द्वारा उक्त प्रधिस्चना की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, प्रभ्वाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्विष्ट करते है जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अपवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जीत सिंह की सेवा समाप्ति नियमानुसार की गई है ? यदि नहीं, तो वद विस राइत का इकवार है ?